भाकृअनुप-केंद्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपूर

कपास की खेती के लिए १३ से १८ अक्टूबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह

(५४ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/ जिले	नवंबर माह में वर्षा की स्थिति (मिली मी.)							साप्ताहिक सलाह
दिनांक	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
पंजाब								
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	0	उत्तरी भारत: उत्तरी कपास क्षेत्र के अधिकांश हिस्सों में कपास चुनाई का कार्य लगभग समाप्त हो चुका है।
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	0	
मुकतसर	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा								
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	
फ़तेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान								
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	0	0	0	0	0	0	
उड़ीसा								फसल गूलर प्रस्फुटन तथा चुनाई की अवस्था में है। रस चूषक कीटों, *स्पोडोप्टेरा*, धब्बेदार तथा अमेरिकन गूलर की सूँडियां पिछेती बुआई की गई फसल में देखी जा रही हैं। सिर्फ जैसिड की संख्या आर्थिक हानि स्तर से ऊपर है। जीवाणु पत्ती धब्बा रोग का प्रकोप राज्य के कुछ हिस्सों में दर्ज किया गया है। कपास की चुनाई प्रातः 10.00 बजे के बाद ही पूरी तरह खुले हुए गूलरों से ही करें। पौधों पर बचे हुए वृद्धिशील गूलरों को पूरी तरह परिपक्व होने के लिए 1.5% डी.ए.पी. के साथ 0.75% पोटेशियम नाइट्रेट का फसल पर छिड़काव किया जा सकता है। पहली चुनाई की कपास अलग रखें। भण्डारण से पहले ठीक से सुखाकर कपड़े के साफ थैलों में भरें। रुई में संदूषण से बचाने के लिए कपास को जूट के बोरों में भण्डारण करने से बचें। नवंबर के इस अंतिम सप्ताह में आव श्यकतानुसार संश्लेषित पाइरेथ्राइड का छिड़काव
कोरापुट	0	11	40	6	0	0	0	
कालाहांडी	0	8	35	0	0	0	0	
बोलांगीर	0	0	5	0	0	0	0	

								गूलर की गुलाबी सूँडी के नियंत्रण के लिए किया जा सकता है।
गुजरात								
अमरेली	0	0	0	0	0	0	0	जूनागढ़ में फसल गूलर विकास , गूलर प्रस्फुटन तथा चुनाई की अवस्था में है। एफिड (चेंपा) की संख्या आर्थिक हानि स्तर से ऊपर (21 से 53/3 पत्तियाँ) ' जैसिड (7 से 11/3 पत्तियाँ/ पौधा), सफेद मक्खी (5 से 12/3 पत्तियाँ/ पौधा), फूल कीट (2 से 4/3 पत्तियाँ/ पौधा), मिलीबग (0 से 2 ग्रेड/ पौधा), मिरिडबग (1 से 3/5 शीर्ष कालियाँ) रिकार्ड की गई। कुछ किसानों के खेत में बीटी कपास में गूलर की गुलाबी सूँडी का प्रकोप दर्ज किया गया है। *एल्टरनेरिया* पत्ती धब्बा तथा आकस्मिक मुरझान भी कहीं-कहीं रिकार्ड किए गए हैं। किसान भाइयों को सलाह दी जा ती है कि गुलाबी सूँडी के गूलरों में अधिक नुकसान से बचने के लिए फसल पर फेनवेलेरेट अथवा लेम्डा-सायहेलोथ्रिन का छिड़काव तुरंत करें। यदि गुलाबी सूँडी का नियंत्रण नहीं किया गया तो इस सूँडी द्वारा इस महीने तथा दिसंबर में भारी हानि हो सकती है। कीटनाशक मिश्रणों का अनुप्रयोग कभी न करें। इससे सफेद मक्खी का प्रकोप बढ़ सकता है जिसके फलस्वरूप कपास चिपचिपी होकर उसकी गुणता खराब होगी। किसान भाइयों को पुन: सलाह दी जाती है कि कपास कि फसल को दिसंबर तक ही समाप्त कर दें, इसे अगले वर्ष 2016 तक ले जाएँ। ऐसा करना गूलर की गुलाबी सूँडी का प्रकोप कम करने तथा बीटी कपास में सूंडि यों के विरुदध प्रतिरोधकता कम करने के लिए आवश्यक है। पिछले मौसम की कपास के डंठल तथा सूखी लकड़ियों के ढेर खेतों की मेढों पर देखे जा रहे हैं। सूखी लकड़ियों , अन्य फसल अवशेष तथा ग्रसित कपास को भण्डारित/संग्रहीत करके न रखें। कपास की सूखी लकड़ियों, फसल अवशेष को जलाने के स्थान पर इसका विधिवत कम्पोस्ट भी बनाया जा सकता है। भण्डार में अथवा घरों में रखा कपास का पुराना बीज गुलाबी सूँडी के पतंगों के वाहक का कार्य कर सकता है। यदि यह बीज इस सूँडी से ग्रसित/क्षतिग्रस्त है तो इसे तुरंत नष्ट कर दें। साफ-सुथरी कपास चुनें और इसे सुखाकर कपड़े के साफ थैलों में भरकर रखने को सुनिश्चित करें। कपास को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों के इस्तेमाल से बचें।
भावनगर	0	0	0	0	0	0	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
अहमदाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
सुरेन्द्रनगर	0	0	0	0	0	0	0	
वडोदरा	17	3	6	3	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	19	0	0	0	0	0	0	
पाटन	0	0	0	0	0	0	0	
सबरकांठा	0	0	0	0	0	0	0	
मेहसाना	0	0	0	0	0	0	0	
मध्यप्रदेश								फसल पुष्पन, गूलर निर्माण तथा गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। जैसिड तथा सफ़ेद मक्खी की संख्या आर्थिक हानि सीमा से ऊपर तथा चेंपा (एफिड) व फूलकीटों की संख्या नगण्य रिकार्ड कि गई है। छीट-पुट स्थानों पर फसल पर लाल पत्ती रोग देखा जा रहा है। पहली चुनाई की गई कपास को ठीक तरह से सुखाकर अलग से कपड़े के थैलों में भण्डारित करें। कपास/रुई को संदूषण से बचाने के लिए जूट के बोरों का इस्तेमाल कपास भरने के लिए न करें।
खरगोन	0	10	3	0	0	0	0	
धार	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	15	0	0	0	0	0	
महाराष्ट्र								
नागपुर	0	0	0	0	0	0	0	फसल गूलर प्रस्फुटन अवस्था में है। जैसिड, एफिड तथा सफेदमक्खी का प्रकोप देखा जा रहा है। कुछ स्थानों/ स्थलों विषेशरूप से जिन
वर्धा	0	0	0	0	0	0	0	

चंद्रपुर	0	0	0	0	0	0	0	खेतों में कीटनाशक मिश्रणों का बार-बार छिड़काव किया गया है, वहाँ सफ़ेद मक्खी तथा एफिड की संख्या में वृद्धि दर्ज की गई है। *एल्टरनेरिया* झुलसा तथा पत्ती धब्बा रोग भी कुछ खेतों में देखे जा रहे हैं। कुछ छिट-पुट स्थानों पर पत्ती-धब्बा भी देखा गया है। प्रस्फुटित गूलरों में कपास का लाल मतकुण भी नोटिस किया गया है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि लाल पत्ती रोग की निगरानी करते रहें और आवश्यक होने पर इसके बचाव तथा नियंत्रण के उपाय आमल में लाएँ। कपास के संकर लालपत्ती रोग के लिए अधिक संवेदनशील हैं। इनकी पहचान करके अगले वर्ष इनकी खेती न करने की सलाह किसानों को दी जा रही है। सूखाकाल तथा अधिक तापमान के कारण गूलर झड़न बढ़ रहा है। बाजार में कपास का अच्छा भाव लेने के लिए साफ-सुथरी कपास चुनें। यथासंभव संरक्षक सिंचाई दें। इसके साथ ही 2.0% यूरिया अथवा 2.0% डी.ए.पी. का पिछेती फसल की पुष्पन अवस्था में छिड़काव करें। हरित गूलर विकास अवस्था में 1.0% यूरिया तथा 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करें। फीरोमोन ट्रैप का प्रयोग करके गूलर की गुलाबी सूँडी की निगरानी करते रहें। यदि ट्रैप में पतंगों की पकड़@ 8 पतंग/ ट्रैप/रात्रि सतत 3 रातों तक आने पर (आर्थिक हानि सीमा) इस सूँडी के प्रबंधन के उपाय करें। बालगार्ड I, बोलगार्ड II तथा गैर बीटी कपास में विशेषत: गुजरात राज्य से सटे जिलों में तथा उन खेतों तथा स्थानों में जहाँ पिछले वर्ष की फसल मार्च/ अप्रैल, 2015 तक रखी गई थी, वहाँ हरित गूलरों में गुलाबी सूँडी की हानि की भी निगरानी करते रहें। चुनी हुई कपास साफ- सुथरी रहे, यह सुनिश्चित करें तथा इसे कपड़े के साफ थैलों में ही भरें। कपास को संदूषित से बचाने के लिए जूट के बोरों का उपयोग न करें। कपास के डंठलों, अवशेषों तथा ग्रसित कपास को संग्रहीत करके न रखें। डंठलों तथा फसल अवशेषों को जलाने के स्थान पर इनका कंपोस्ट बनाया जा सकता है। कपास चुनाई कार्य यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयत्न करें।
यवतमाल	0	0	0	0	0	0	0	
अमरावती	0	0	0	0	0	0	0	
अकोला	0	5	0	0	0	0	0	
बुलढाना	0	22	11	0	0	0	0	
परभणी	0	16	7	0	0	0	0	
नांदेड़	0	8	4	0	0	0	0	
बीड़	3	17	4	0	0	0	0	
वासिम	0	0	0	0	0	0	0	
धुले	4	23	13	0	0	0	0	
जलगांव	0	23	13	0	0	0	0	
जालना	0	22	11	0	0	0	0	
औरंगाबाद	6	17	7	5	0	0	0	
तेलंगाना								
आदिलाबाद	0	8	8	0	0	0	0	फसल पुष्पन से चुनाई की अवस्था में है। कपास की पहली तथा दूसरी चुनाई चल रही है। नत्र तथा पोटाश उर्वरकों की तीसरी विखंडित मात्रा मृदा में दें। जहाँ आवश्यक हो वहाँ नत्र तथा पोटाश @ 25-30 किग्रा. यूरिया तथा 10-15 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश की अतिरिक्त मात्रा चक्रवाती वर्षा से अधिक मृदा नमी के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए मृदा में अनुप्रयोग करें। रस चूषक कीटों की संख्या, जैसिड (0.2 से 11.10/3 पत्तियाँ), सफेद मक्खी (0.8 से 2.4/3 पत्तियाँ), फूलकीट (0.2 से 0.6/3 पत्तियाँ), एफिड (2.4 से 6.6/3 पत्तियाँ), रिकार्ड की गई है। सभी रस चूषक कीटों की यह संख्या आर्थिक हानि स्तर से कम है। **बारानी हल्की मृदा:** उत्तर-पूर्व मानसून तथा चक्रवाती वर्षा के कारण क्षतिग्रस्त फसल कुछ क्षेत्रों में 25-30 किग्रा. यूरिया के साथ 10 से 25 किग्रा.एम.ओ.पी./ एकड की अतिरिक्त मात्रा का अनुप्रयोग करने से पुनरूज्जीवित हो सकती है। **बारानी काली मृदाएँ:** भारी काली मृदाओं में फसल वृद्धि सामान्य है। *राइजोक्टोनिया* जड़
वारंगल	0	0	8	0		0	0	
खम्मन	3	0	3	0	0	0	0	
कारिंगर	0	5	8	0	0	0	0	
नालगोंडा	0	0	0	0	0	0	0	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	0	0	0	0	0	0	0	
प्रकासम	0	0	0	0	0	0	0	

								गलन के नियंत्रण के लिए कॉपर आक्सी-क्लोराइड @ 3.0ग्रा./लीटर पानी की दर से इसका घोल प्रभावित पौधों की जड़ों में डालें। फफूँदजनित पत्ती धब्बा रोगों के नियंत्रण के लिए फसल पर प्रोपिकाजोल @ 1.0मिली./ली. अथवा मेंकोजेब+कार्बेन्डेजिम 2.0ग्रा./ली. पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।
कर्नाटक								
धारवाड़	0	12	9	8	5	0	0	सभी क्षेत्रों में ठंडे मौसम तथा जैसिड के बढ़ते प्रकोप के कारण बीटी कपास में लाल पत्ती रोग बढ़ रहा है। किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि फसल पर 1.0%डी.ए.पी. का छिड़काव जारी रखें। गूलर की गुलाबी सूँडी तथा सफ़ेद मक्खी के प्रबंधन के लिए सिफारिस किए गए उपायों को अमल में लाएँ। कुछ क्षेत्रों में *हबेसियम* तथा *आरबोरियम* देसी कपास में दहिया रोग (ग्रे-मिलड्यू) का प्रकोप बढ़ रहा है। इसके प्रभावी नियंत्रण के लिए कारबेंडेजिम 50डब्लूपी. @ 1.0 ग्रा./ली. की दर से फसल पर छिड़काव करें। जहाँ अगेती कपास की अंतिम चुनाई हो चुकी है उन खेतों में फसल के पौधों को तुरंत उखाड़ दें। जिससे कपास की फसल की सिंचाई करके नई फलन-बहार लेने के स्थान पर दूसरी कम अवधि की दलहनी फसल की बुआई हो सके। कपास की फसल को ही सिंचाई करके आगे बढ़ाना कपास पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अवांछित है। जहाँ सिंचाई की सुबिधा है वहाँ दूसरी फसल के रूप में चना अथवा गेहूँ की रबी फसल लें। कपास की उखाड़ी हुई लकड़ियों/ फसल अवशेषों को जलाने अथवा ईंधन के रूप में प्रयोग करने के स्थान पर उसका कंपोस्ट अथवा केंचुआ खाद बनाया जा सकता है। कंपोस्ट बनाने वाले संवर्धक अथवा फसल अवशेष को विघटित करने वाले सूक्ष्मजीव समूह, जैसे, *फेनरोचिट, प्लुओरोटस* तथा *ट्राइकोर्डोमा* का अनुप्रयोग फसल अवशेष, कपास के डंठलों को शीघ्र आपघटित करने के लिए किया जा सकता है।
हवेरी	0	9	13	4	0	0	4	
मैसूर	10	25	9	22	3	0	6	
तमिलनाडु								
पेरंबलुर	13	13	5	0	0	0	0	फसल प्रारंभिक गूलर निर्माण अवस्था में है। दूब घास (*सायनोडन डेक्टाइलान*), गाजरघास (*पार्थेनियम*) तथा *ट्राएन्थेमा पोर्तुलेकेस्ट्रम* जैसे प्रमुख खरपतवारों की रोकथाम के लिए अंकुरण- पश्चात खरपतवारनाशकों का अनुप्रयोग किया जा सकता है। पायरिथायोबैक सोडियम@ 2 मिली/ली. पानी की दर से छिड़काव करके मेढ़ों पर उगे खरपतवारों की रोकथाम करें। घासों के नियंत्रण के लिए *एफीनोक्लोआ* जाति, *क्लिओम विस्कोसा, फायलन्थस माडरेसपेटेंसिस* की रोकथाम के लिए सिफ़ारिश किए गए उपायों को अपनाएँ। बारानी कपास में उत्तर-पूर्वी मानसून से प्राप्त वर्षाजल का संरक्षण करने के लिए मृदा नमी संरक्षण उपाय अपनाएँ। श्रीविलिपुत्तूर में जहाँ शीतकालीन सिंचित कपास की बुआई की गई है वहाँ छिटपुट वर्षा के साथ मौसम ठंडा है। फसल गूलर विकास अवस्था में है। रस चूषक कीटों, जैसिड, सफेद मक्खी तथा फूलकीट और तनाघुन का प्रकोप रिपोर्ट किया गया है। जड़ गलन का प्रकोप भी देखा जा रहा है।
सलेम	12	9	6	0	0	0	0	
त्रिची	16	11	5	0	4	0	11	
विरडुनगर	41	19	19	4	4	4	12	

							तनाघुन तथा जड़ गलन की रोकथाम के लिए क्लोरपायरिफोस@ 2.0 मिली/ली. तथा बाविस्टीन@ 2.0 ग्रा./ली. पानी की दर से पौधों की जड़ों में डालें।

	आदर्श वर्षा				
वर्षा मि.मी.	<5	5-20	20-50	50-80	>80

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. ब्लेज़ डी-सूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)
डॉ. एन अनुराधा	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)

प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआइसीएसटीआइपी केंद्र)

वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	09464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. (श्रीमति) सुनीत पंधर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	009814513681	suneet@pau.edu
डॉ. संजीव कुमार कटारिया	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, आरआरएस, भटिंडा (पंजाब)		k.sanjeev@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार-124004 (हरियाणा)	09416325420	cotton@hau.ernet.in
डॉ. ऋषिकुमार	सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)	09729106299	Rishipareek70@yahoo.in
डॉ. रूप सिंह मीना	स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान	09413024080	rsmeenars@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	09437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	09662532645	girishfaldu@rediffmail.com

डॉ. ऐ. एन. पसलवार	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	09822220272	adinathpaslawar@rediffmail.com
अरविंद डी. पंडागले	मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, नांदेड़ (महाराष्ट्र)	07588581713	arvindpandegale@yahoo.co.in
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	09406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	0949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09448861040	yraladakatti@rediffmail.com
डॉ. एम. वाय. अजयकुमार	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09880398690	dr.my.ajay@gmail.com
डॉ. एस. सोमासुंदरम	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर (तमिलनाडु)	09965948419	rainfed@yahoo.com
डॉ. एम. गुनसेकरण	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कपास अनुसंधान संस्थान, श्रीविल्लीपुथुर (तमिलनाडु)	09443631359	gunasekaran.pbg@gmail.com

हिन्दी संसकरण:

डॉ. उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अनुभाग,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
uanandankar@gmail.com